

ऑडिटिंग के बुनियादी सिद्धांत और तकनीकें

लेखापरीक्षा के सिद्धांत

ऑडिटिंग मूलभूत सिद्धांतों के एक समूह द्वारा शासित होती है जो सुनिश्चित करती है कि प्रक्रिया प्रभावी और विश्वसनीय रूप से संचालित हो। ये सिद्धांत लेखा परीक्षकों को उनके काम में मार्गदर्शन करते हैं और लेखा परीक्षा प्रक्रिया की गुणवत्ता और अखंडता बनाए रखने में मदद करते हैं। ऑडिटिंग के बुनियादी सिद्धांतों में शामिल हैं:

1. सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और स्वतंत्रता:

- ईमानदारी: लेखा परीक्षकों को अपना काम ईमानदारी और मजबूत नैतिक मानकों के साथ करना चाहिए।
- वस्तुनिष्ठता: लेखा परीक्षकों को अपने दृष्टिकोण और निर्णय में निष्पक्ष और निष्पक्ष होना चाहिए।
- स्वतंत्रता: हितों के किसी भी टकराव से बचने के लिए लेखा परीक्षकों को ऑडिट की जा रही इकाई से स्वतंत्रता बनाए रखनी चाहिए।

2. गोपनीयता:

- लेखा परीक्षकों को ऑडिट प्रक्रिया के दौरान प्राप्त जानकारी की गोपनीयता का सम्मान करना चाहिए और इसे अनधिकृत पार्टियों को प्रकट नहीं करना चाहिए।

3. व्यावसायिक योग्यता और उचित देखभाल:

- लेखापरीक्षकों के पास लेखापरीक्षा करने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और योग्यता होनी चाहिए। उन्हें अपने काम में उचित सावधानी, परिश्रम और संपूर्णता भी बरतनी चाहिए।

4. योजना और पर्यवेक्षण:

- प्रभावी ऑडिट के लिए उचित योजना आवश्यक है। लेखापरीक्षकों को लेखापरीक्षा के दायरे, उद्देश्यों और प्रक्रियाओं की रूपरेखा बताते हुए एक लेखापरीक्षा योजना विकसित करनी चाहिए। पर्याप्त पर्यवेक्षण यह सुनिश्चित करता है कि ऑडिट योजना के अनुसार आयोजित किया जाता है।

5. लेखापरीक्षा साक्ष्य:

- लेखा परीक्षकों को अपने निष्कर्षों और निष्कर्षों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त और उचित ऑडिट साक्ष्य इकट्ठा करना चाहिए। इसमें विश्वसनीय साक्ष्य प्राप्त करने के लिए विभिन्न ऑडिट प्रक्रियाएं निष्पादित करना शामिल है।

6. दस्तावेजीकरण:

- लेखापरीक्षकों को अपने काम, निष्कर्षों और निष्कर्षों का व्यापक रूप से दस्तावेजीकरण करना चाहिए। दस्तावेजीकरण ऑडिट प्रक्रिया का रिकॉर्ड प्रदान करता है और ऑडिटर की रिपोर्ट का समर्थन करता है।

7. ऑडिट रिपोर्टिंग:

- लेखा परीक्षकों को एक स्पष्ट और संक्षिप्त ऑडिट रिपोर्ट प्रदान करनी चाहिए जो उनके निष्कर्षों, राय और सिफारिशों को संप्रेषित करती हो। रिपोर्ट ऑडिट के दौरान एकत्र किए गए सबूतों पर आधारित होनी चाहिए।

अंकेक्षण की तकनीकें

ऑडिटिंग तकनीक वे तरीके और प्रक्रियाएं हैं जिनका उपयोग ऑडिटर साक्ष्य इकट्ठा करने और उनका मूल्यांकन करने के लिए करते हैं। ये तकनीकें सुनिश्चित करती हैं कि ऑडिट संपूर्ण और प्रभावी हो। ऑडिटिंग की मुख्य तकनीकों में शामिल हैं:

1. निरीक्षण:

- भौतिक निरीक्षण: उनके अस्तित्व और स्थिति को सत्यापित करने के लिए इन्वेंट्री, उपकरण और इमारतों जैसी भौतिक संपत्तियों की जांच करना।

- दस्तावेज़ निरीक्षण: सटीकता और प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए चालान, अनुबंध और बैंक विवरण जैसे दस्तावेज़ों और रिकॉर्ड की समीक्षा करना।

2. अवलोकन:

- संगठन द्वारा की जा रही प्रक्रियाओं और प्रक्रियाओं का अवलोकन करना। उदाहरण के लिए, इन्वेंट्री की गिनती या लेनदेन की प्रोसेसिंग का अवलोकन करना।

3. पूछताछ और पुष्टि:

- पूछताछ: संगठन के संचालन और नियंत्रण में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए प्रबंधन, कर्मचारियों और अन्य संबंधित पक्षों से प्रश्न पूछना।

- पुष्टिकरण: रिकॉर्ड की सटीकता को सत्यापित करने के लिए बाहरी पक्षों से सीधे पुष्टि प्राप्त करना, जैसे बैंक पुष्टिकरण या प्राप्य पुष्टिकरण।

4. पुनर्गणना:

- अभिलेखों और दस्तावेजों की गणितीय सटीकता की पुष्टि करना। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए दोबारा गणना करना शामिल है कि कोई त्रुटि न हो।

5. पुनः प्रदर्शन:

- यह जांचने के लिए प्रक्रियाओं या नियंत्रणों को स्वतंत्र रूप से निष्पादित करना कि क्या उन्हें इकाई द्वारा सही ढंग से निष्पादित किया गया है। उदाहरण के लिए, किसी बैंक समाधान की सटीकता को सत्यापित करने के लिए उसे दोबारा निष्पादित करना।

6. विश्लेषणात्मक प्रक्रियाएं:

- रुझानों, पैटर्न और विसंगतियों की पहचान करने के लिए वित्तीय और परिचालन डेटा का विश्लेषण करना। इसमें अनुपात विश्लेषण, प्रवृत्ति विश्लेषण और उद्योग बेंचमार्क के साथ तुलना शामिल हो सकती है।

7. स्कैनिंग:

- असामान्य वस्तुओं या लेनदेन की पहचान करने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की त्वरित समीक्षा करना, जिसके लिए आगे की जांच की आवश्यकता हो सकती है।

8. नमूनाकरण:

- विस्तृत जांच के लिए लेनदेन या रिकॉर्ड का एक प्रतिनिधि नमूना चुनना। नमूनाकरण लेखा परीक्षकों को परीक्षण किए गए नमूने के आधार पर पूरी आबादी के बारे में निष्कर्ष निकालने में मदद करता है।

निष्कर्ष

ऑडिटिंग के सिद्धांत और तकनीक एक मजबूत और विश्वसनीय ऑडिट प्रक्रिया की नींव बनाते हैं। इन सिद्धांतों का पालन करके, लेखा परीक्षक अपने काम की अखंडता, सटीकता और पारदर्शिता सुनिश्चित करते हैं। लेखा परीक्षकों द्वारा अपनाई गई तकनीकें उन्हें अपने निष्कर्षों और निष्कर्षों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त और उचित साक्ष्य इकट्ठा करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे अंततः वित्तीय जानकारी की विश्वसनीयता और विश्वसनीयता बढ़ती है।

Ravindra Kumar

Associate Professor
Department of Commerce
Yogoda Satsanga Mahavidyalaya